Pedagogy of Reading and Writing
पठन और लेखन का शिक्षणशास्त्र

सामान्य रूप से देखा जाय तो पठन एवं विमर्श एक-दूसरे से सम्बन्धित होते है। एक छात्राध्यापक की वास्तविक रूप से पठन की समस्त क्रियाओं को समझते हुए पठन करना चाहिए तथा लेखन के रूप में उसमें सभी प्रकार की सावधानियों को ध्यान में रखते हुए विषय वस्तु को नवीन, सार्थक एवं सारगर्भित रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।

लिखना और पठन का एक-दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध है। एक के अभाव में दूसरा कार्य असम्भव है। अतः हिन्दी अध्यापक को बालक में लिखने और पढ़ने के आधार को समन्वय करके प्रस्तुत करना चाहिए। भाषा में पढ़ायी एवं लिखायी का विशिष्ट सम्बन्ध है। पढ़ायी के बिना लिखायी सम्भव नहीं हो सकती और लिखायी के बिना पढ़ायी कठिन है। अतः दोनों का साथ-साथ ही चलना उचित है।

Scanned by TapScanner

Difference between Oral and Written Language
मौखिक तथा लिखित भाषा में अन्तर

लिखना और बोलना दोनों ही भाषायी कौशल है। दोनों ही अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम है तथापि दोनो में अन्तर है :—

1. बोलने में मौखिक अभिव्यक्ति होती है, जबकि लिखने में लिखित अभिव्यक्ति।

2. बोलने में वर्णों शब्दों तथा वाक्यों का उच्चारण प्रमुख होता है, जबकि लिखने में इनका लिखना मुख्य होता है।

3. बोलना सरलता, सहजता एवं शीघ्रता से सीखा जा सकता है किन्तु लिखना सीखना अपेक्षाकृत कठिन होता है।

4. बोलना अनुकरण द्वारा भी सीखा जा सकता है किन्तु लिखना सीखने के लिए अपनी शैली विकसित करनी होती है।

5. बोलने से व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रभावशाली बनता है किन्तु लिखने से नहीं।

6. मानसिक स्वास्थ्य को मौखिक अभिव्यक्ति जितनी ठीक रखती है उतनी लिखित अभिव्यक्ति नहीं।

7. मौखिक भाषा क्षेत्रीयता, प्रान्तीयता आदि के प्रभाव से ग्रस्त हो सकती है किन्तु लिखित भाषा नहीं

8. भाषण, प्रश्नोत्तरी, कविता पाठ, गद्य पाठ, कहानी कथन, वाद-विवाद आदि बोलने के प्रमुख तत्व या साधन है, जबकि निबन्ध लेखन, कहानी लेखन, कविता लेखन, प्रतिलेख, तथा श्रुतलेख आदि भाषा सीखने के साधन है।

Scanned by TapScanner

9. भाषा में स्थायित्व लेखन के माध्यम से ही आता है, बोलने से नहीं।

10. राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का आधार लिखित भाषा ही है, मौखिक भाषा नहीं।

11. संस्कृति तथा ज्ञान को लिखित भाषा द्वारा दीर्घजीवी बनाया जा सकता है, मौखिक भाषा द्वारा नहीं।

12. मौखिक भाषा रोचक एवं सरल है, जबकि लिखित भाषा नीरस है।

उपरोक्त बिन्दुओं से स्पष्ट है कि लेखन और भाषण में पर्याप्त भिन्नता है तथापि दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

Scanned by TapScanner